अध्याय चतुर्थ

''रायगढ़ एवं सरगुजा जिलों में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार''

''रायगढ़ एवं सरगुजा जिलों में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार''

१. जिलें में राष्ट्रीय जागरण तथा ब्राह्मणों का सहयोग।

२. असहयोग आन्दोलन तथा ब्राह्मणों का सहयोग।

३. सविनय अवज्ञा आन्दोलन और ब्राह्मणों का प्रभाव।

४. भारत छोड़ो आन्दोलन तथा ब्राह्मण वर्ग का योगदान।

५. भारतीय स्वतंत्रता एवं ब्राह्मण वर्ग की नियति।

जेक्स लावेल रचित कविता –

"सत्य भले ही जगती-तल में दिखे लटकता शूली पर।
और दिखे अन्याय शान से डरा हुआ सिंहासन पर।
शूली का प्रिय सखा सत्य वह, तो भी इस भावी का,
पथ पलट देगा, क्षण भर में होगा पूजित घर-घर।
सदा खड़े भगवान रहेंगे, तिमिरा छन्न गगन में।
अपने प्यारों को बल देने, जन में और विजन में।।"

जिलो में राष्ट्रीय जागरण तथा ब्राह्मण वर्ग का सहयोग

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना देश में हुई साथ ही छत्तीसगढ़ अंचल में भी हुई, यह संस्था इस अंचल के हर जिले में हुई प्रारंभ में राष्ट्रीय कांग्रेस ने शासन और शासित (सरकार और जनता) के बीच संपर्क की कड़ी के रूप में भूमिका अदा की।

दिसम्बर 1891 में अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन नागपुर में आयोजित हुआ, इस सम्मेलन में सरकार की विभिन्न नीतियों की आलोचना की गई। विशेषतः किसानों पर लगाये गये नहर का तीव्र विरोध किया गया, मालगुजारों और किसानों ने इस कर का प्रतिकार करते हुये प्रस्ताव पारित किया कि मध्यप्रदेश के चीफ कमीश्नर के बिलासपुर आगमन पर एक शिष्ट मण्डल भेंट करेगा। यहां पर नहर कर के विरोध में 20 हजार मालगुजार एवं किसान भी एकत्रित हुये उन्होंने मांग की कि लगान की दर निश्चित और स्थायी होनी चाहिए तथा किसानों को न्यूनतम दर पर ब्याज में ऋण देने की व्यवस्था की जानी चाहिए। (1)

20 जनवरी 1894 को मध्यप्रदेश के चीफ कमीश्नर का आगमन हुआ, जिसके लिये दरबार आयोजित किया गया जिसमें कमीश्नर ने अंचल के समस्त राजाओं और जमीदारों से दुर्भिक्षग्रस्त जनता की सहायता के लिये अपील की। (2)

---

1. प्रयाग दत्त शुक्ल : क्रान्ति के चरण : पृ. 44-45
2. प्रयाग दत्त शुक्ल: क्रान्ति के चरण: पृ. 57

जब भारतीय जनता प्रशासनीय तंत्र की नौकरशाही से बेचैन थी एवं ब्रिटानी हुकूमत के खूनी पंजे मध्यकालीन आक्रमंताओं से सने थे तब भारतीय जनता को अपनी मानसिकता परिवर्तित करने के लिये विवश होना पड़ा, अंततः निराशा में डूबी जनता के निवारणार्थ धार्मिक एवं सामाजिक सुधार की अनवरत चेष्टा की गई, यह युग भारतीय इतिहास में पुनः जागरण का काल कहलाता है।

अपनी मानसिक संकीर्णता के दायरे से मुक्त होने का भारतीय विचारकों और समाज सुधारकों ने जो यत्न किया उस सांस्कृतिक पुनरुत्थान के अन्तर्गत ईसाई-मिशनरियों की गतिविधियों एवं निर्धन शोषित एवं उपेक्षित हिन्दुओं को धर्म परिवर्तन से बचाने के लिये कुछ नियंत्रक संस्थाओं का अभ्युदय हुआ इस दिशा में धर्म तथा समाज और आर्य समाज ने महती सेवाएँ की

सन् 1803 में भारत में जब उन दिनों अंग्रेजों का प्रभुत्व बढ़ रहा था, अंग्रेजों और भोसलों में देवगाँव की संधि हुई थी । जिसके अनुसार बरार एवं कटक का राज्य अंग्रजों को प्राप्त हो चुके थे और नागपुर में उनका एक ब्रिटेश रेजीमेंट भी रहने लगा था, आपा जी से रेजीडेन्ट का विरोध किया किन्तु पराजित होने पर संधि कर ली जिसके फलस्वरूप पूर्व में सरगुजा , जशपुर, सोहागपुर, संबलपुर के राज्य उसे अंग्रेजों को देने पड़े।[1] छत्तीसगढ़ के दो प्रमुख राजवाड़े इस संधि के परिणाम स्वरूप ब्रिटेश शासन के अंतर्गत आये ये राज्य थे सरगुजा तथा जशपुर। 2

---

1. डॉ0 शकुन्तला वर्मा : छत्तीसगढ़ लोक जीवन एवं लोग साहित्य का अध्ययन पृ.22
2. डॉ0 शकुन्तला वर्मा: छत्तीसगढ़ लोक जीवन एवं लोग साहित्य का अध्ययन पृष्ठ 23.

तात्कालीन छत्तीसगढ़ में 17 रियासतें थी, ये रियासतें प्रारंभ में ब्रिटेश शासन के प्रत्यक्ष अंकुश से मुक्त थी किन्तु इस नियम के बन जाने से किसी राजा की मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी राजा राजपद की स्वीकृति ब्रिटेश शासन के द्वारा प्राप्त करता था। सामान्यतः राजा के दुर्व्यवहार अथवा अल्पावस्था की स्थिति में ब्रिटेश शासन राज्य के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप कर सकता था, इन राज्यों से ब्रिटेश शासन को 2,43,000 रूपये वार्षिक आय होती थी। अब हम छत्तीसगढ़ की उन देशी रियासतों का उल्लेख करेंगे जिनकी शासन व्यवस्था में ब्रिटेश शासकों का हस्तक्षेप था, ये रियासतें तात्कालीन रायगढ़ जिले के अन्दर थी। (1)

रायगढ़ रियासत में 1862 में राजा देवनाथ के पुत्र घनश्याम सिंह इस रियासत के उत्तराधिकारी बनाये गये, परन्तु शासन व्यवस्था में अनियमितता का आरोप लगाकर ब्रिटिश शासन ने एक अधीक्षक की नियुक्ति की जो भूपदेव सिंह के राजा बनने तक चलता रहा। (2)

सारंगढ़ रियासत में राजा संग्राम सिंह सन् 1830 से 1872 तक निःशासन करते हुये ब्रिटिश शासन से सम्मानित होते रहे, परन्तु सन् 1872 में जब उनकी मृत्यु हो गई तब नाबालिग प्रताप सिंह रियासत के उत्तराधिकारी हुये। शीघ्र ही शासन में दक्षता का आभाव दिखाकर ब्रिटेश अधिकारियों ने हस्तक्षेप की नीति को अपनाते हुये शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली। (3)

---

1. गजेटियर आफ इंडेया एम.पी.डिस्ट्रीक पेज नं. 55
2. गजेटियर आफ इंडेया- एम.पी. डिसट्रीक पेज नं. 55
3. गजेटियर आफ इंडेया - एम.पी. डिसट्रीक पेज नं. 55

जिले के अन्य रियासत की स्थिति भिन्न थी यहां के राजा रणजीत सिंह के अत्याचार से जनता खिन्न थी और इसे ही महत्वपूर्ण कारण मानकर ब्रिटिश शासन ने तात्कालीन राजा को अपदस्त कर दिया और सन 1875- 1892 तक शासन कार्य ब्रिटिश शासन के ही माध्यम से चलता रहा। इसी प्रकार की स्थिति छुई खदान रियासत में भी घटित हुई थी। यहाँ ब्रिटिश शासन ने एक दीवान की नियुक्ति की थी। (11)

बस्तर रियासत की घटना भी कुछ इसी प्रकार की है। रियासत की जनता ने अपने राजा के अत्याचार से तंग आकर इनका घेराव किया था। फलस्वरूप ब्रिटिश शासन ने कर्नलवार्ड को घटना की खोजबीन के लिये भेजा था। अंततः इस रियासत में भी अधीक्षक की नियुक्ति कर दी गई। (12)

इसी प्रकार खैरागढ़ रिसायत में भी ब्रिटिश अधीक्षक की नियुक्ति सन 1883 तक चलता रहा। (13)

इससे स्पष्ट है कि छत्तीसगढ़ की देशी रियासतें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश शासन द्वारा शासित थी।

इस समय भारत में कपास सीमा शुल्क संबंधी विवाद तथा राष्ट्रीय पत्रकारिता पर प्रतिबंध लगा दिया गया सन् 1878 में भारतीयों के दमन हेतु भारतीय शस्त्र अधिकारी नियम पारित किया गया जिसमें भारतीयों को शस्त्र रखना व्यापार करना दण्डनीय अपराध माना गया इससे भारतीयों के मन में विरोध की भावना घर कर गयी। छत्तीसगढ के इस शांत अंचल ने समग्र भारत के साथ स्वर में स्वर मिलाकर विरोध प्रकट किया। (14)

---

1. डी.पी.मिश्रः मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास पृ. 29।
2. श्री मुरलीधर मिश्रः से साक्षात्कारः 27 अग. 1977
3. टाइम्स आफ इण्डिया : बाम्बे 17 दिसम्बर 1920 पेज 10
4. डी.पी.मिश्रः मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास पृ.305.

1884 का इलबर्ट विधेयक न तो जातीय भेदभाव को दूर कर सका ना ही शासन की असुविधाओं को ही दूर कर सका। एक तरफ कृषि एवम् भारतीय उद्योग धन्धे की स्थिति दयनीय हो गई और देश निर्धन हो गया। दूसरी ओर शासन व्यवस्था अत्यंत व्यय पूर्ण थी, नौकरी का द्वार उच्च पदो के लिये बंद था तथा शिक्षा का मात्र उद्देश्य सरकारी नौकरियों के लिये आदमी तैयार करना था। वेतन इतना कम था कि निर्धनता में वृद्धि होती रही और शिक्षित वर्ग में बेकारी बढ़ती रही। इससे स्पष्ट है कि राजकीय उद्घोषणा और अन्य घोषणाओं के विपरीत लार्ड लिटन की नीति से असंतोष फैल गया। (1)

राष्ट्रीय जागरण (भारतीयों में)

इंडियन सिविल सर्विस इंडियन पुलिस सर्विस, इंडियन आडिट एण्ड एकाउंटस सर्विस आदि अखिल भारतीय सेवाओं और राजस्व और न्यायिक सेवाओं जैसी प्रान्तीय सेवाओं की स्थापना ने इस विशाल देश के विभिन्न अंगों को एकता के सूत्र में बांध दिया जैसे पहले कभी नही हुआ यही वह ढांचा था जिसे प्रशासनिक ढांचा कहा जा सकता है। इसने ही भारत का वास्तविक एकीकरण कराया भारतीय सेना तीन महाद्वीपों में ख्याति अर्जित करने में सफल हुई। (2)

सैनिक और गैर सैनिक भारतीय एवम् प्रान्तीय सेवाओं की सफलता आधुनिक यातायात एवं संचार साधनों पर निर्भर थी। वस्तुतः संचार साधनो ने विस्तृत देश को एक सूत्र में गुंथ दिया और भौगोलिक एवम सुस्पष्ट हो गया। (3)

---

1. श्री मुरलीधर मिश्रः साक्षात्कार दिनांक 29 अगस्त 1977
2. नगर पालिका निगमः रायपुर वार्षिक विवरण 1971-72 पृ.33
3. कर्मवीर जबलपुर 21 जनवरी 1921.

भारतीय जनजीवन में केवल राजनीतिक पहलू पर ही अंग्रेज का हस्तक्षेप नहीं था बल्कि सामाजिक जीवन भी हस्तक्षेप का विषय था यहां के लिये विवाह स्वीकृति आयु अधिनियम बनाया गया जिसमें विवाह की न्यूनतम आयु 21 वर्ष कर दी गयी। [11] इस अधिनियम का संपूर्ण देश की भांति छत्तीसगढ अंचल ने भी अपने मान्य नेता लोकमान्य तिलक का साथ देते हुये विरोध किया यह विधेयक वस्तुतः स्वतंत्र सामाजिक जीवन में अंग्रेजों का हस्तक्षेप था जिसे सहन नहीं किया जा सकता था।

सामूहिक राजनीति का उत्थान

लोकमान्य तिलक विदेशी शासन को अभिशाप समझते थे और भारत की दुर्दशा के कारण विदेशी शासन को मानते थे। भारतीयों में जनजागृति के लिये नयी भावना और नया जीवन भरने के लिये तिलक ने हिन्दू देवी देवताओं और महापुरूषों को अपना उपकरण बनाया। छत्तीसगढ़ अंचल की प्रादेशिक राजधानी उन दिनों नागपुर थी जहां उत्सवों को अत्यधिक धूमधाम से मनाया जाने लगा जिसका प्रभाव छत्तीसगढ के दुर्ग, रायपुर, रायगढ़, बिलासपुर रतनपुर आदि स्थानों पर हुआ और इन स्थानों के अनेक गांवो में भी प्रति वर्ष मनाया जाने लगा। इस प्रकार गणेशोत्सव आदि त्यौहारो के माध्यम से छत्तीसगढ़ अंचल राष्ट्रवाद की प्रमुख धारा से जुड़ गया। [12]

---

1 2 . जी.एन.सिंह : भारत का वैधानिक एवम राष्ट्रीय विकास पृ. 136.

सन् 1896-97 में महाराष्ट्र में बड़ा भीषण दुर्भीक्ष पड़ा जिसमें करीब 40 लाख लोग प्रभावित हुये, भारतीय समाचार पत्रो ने जब स्थिति का स्पष्ट चित्रण किया तो ब्रिटिश शासन ने अपने एक अधिकारी नियुक्त किये वह इतना दुष्ट था कि इसके कार्य और व्यवहार से जनता असंतुष्ट थी। परिणाम स्वरूप एक नवयुवक ने उसे गोली मार दी। इस हत्या के प्रतिकार में शासन का दमन चक्र और कठोर हो गया। [1]

छत्तीसगढ़ का अंचल भी दुर्भिक्ष से अप्रभावित नहीं रहा एक ओर तो ब्रिटिश शासन का दमन चक्र चल ही रहा था दूसरी ओर संपूर्ण भारत की तरह छत्तीसगढ़ का यह अंचल भी प्रकृति के प्रकोप का भाजन बन गया 1899 में वर्षा के अभाव में भीषण महामारी और दुर्भिक्ष पड़ा लगातार वर्षा के आभाव में छत्तीसगढ़ी कृषक पंगु हो गये तथा जनमानस में अत्यधिक असंतोष उत्पन्न हुआ और सरकार को विशेष रूप से दोष दिया गया। वस्तुतः इन सब दुखों की जड़ शासन की आर्थिक नीति थी जो राष्ट्रीय हितो के प्रतिकूल थी छत्तीसगढ में पहले ही सिंचाई सुविधाओं नही थी अतः वर्षा के अभाव में यह अंचल विशेष रूप से प्रभावित हुआ। भू सम्पत्ति का मूल्य धीरे-धीरे गिर गया, ब्याज की दर तेजी से बढ़ गई और कृषि संबंधी द्रव्य लगभग अदृश्य हो गया, इन सबका परिणाम यह हुआ कि किसानों की दशा अत्यन्त सोचनीय हो गयी। [2]

इसके प्रभाव से ही स्वदेशी आन्दोलन और बंगभंग आन्दोलन को पृष्ट भूमि मिली।

---

1. डी.पी.मिश्र: मध्यप्रदेश में स्वाधीनता संग्राम आन्दोलन पृ. 196
2. श्री जे.पी. शर्मा मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आन्दोलन पृ. 37

इन दिनों छत्तीसगढ़ का राजनीतिक नेतृत्व नागपुर के राजनीतिज्ञों के कर कमलों में था तब भी उग्रवादी विचारधारा के नेता दादा साहब खापर्डे एवम् मुंजे के समर्थकों की कमी नही थी, इन लोगों को अंग्रेजों की न्यायाप्रियता में कोई विश्वास नहीं रहा था। ये लोग इस निश्चय पर पहुंचे कि प्रार्थना पत्र द्वारा कुछ भी प्राप्त करना असंभव है। इन लोगों की दृष्टि में विदेशी राज्य अपमान जनक था उनको आत्म निर्भर स्वतंत्र कार्य में विश्वास था किन्तु अंग्रेजो की उदारता और परोपकारिता से उन्हें किसी प्रकार की आशा नही थी उन्होनें अपना कार्यक्रम निश्चित किया- **'विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार'**

'स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार'

'राष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना'

सन् 1910 के समय में छत्तीसगढ में सशस्त्र क्रान्ति अथवा विद्रोह का स्वर कतिपय स्थानो में मुखरित हुआ था, जिसमें बस्तर का विद्रोह भी शामिल था। सन 1907 में सूरत अधिवेशन में गरमदल एवं नरमदल स्पष्ट हो चुका था, थियोसीफिकल सोसायटी की अध्यक्षा श्रीमती एनीबेसेन्ट ने होमरूल लीग की स्थापना की भारत के साथ-साथ ही यह आन्दोलन छत्तीसगढ़ में भी जोर पकड़ता गया, इस आन्दोलन को प्रभावहीन बनाने के लिये ब्रिटिश शासन की ओर से होम रूल लीग की गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को प्रतिबंधित किया परन्तु इस आन्दोलन को जितना ही दमन चक्र के प्रयास से रौंदने का प्रयत्न किया यह आन्दोलन उग्र होता गया।

संपूर्ण भारत की तरह ही छत्तीसगढ़ में रोल्ट एक्ट का विरोध किया गया, ब्रिटिश शासन के कठोर शासन तथा दमनकारी विधेयों का विरोध ओजस्वी भाषण से किया विरोध का स्वर यहां भी सशक्त था कि कर्मचारियों ने हर जिलो में हडताल कर दी।

1919 की जालिया वाला बाग की दुखद घटना को देश, विदेश, एवम् प्रान्त में अपरिमित विरोध के साथ देखा गया था। अमृतसर की विभीषिका ने मध्यप्रान्त को भी आघात पहुंचाया।

चूंकि छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव, दुर्ग, रायगढ, रायपुर, सरगुजा, आम्बिकापुर, बिलासपुर शहर रेलमार्ग से संबंधित होने के कारण राष्ट्रीय नेताओं के कलकत्ता या बंबई आते जाते उपर्युक्त स्थानों के नेता एवं स्वयंसेवक प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय नेताओं के विचारों को स्थानीय नेता कार्यक्रम में इन स्थानों में परिणित किया करते छत्तीसगढ के इन जिलो के शहरो कस्बों, गांवो में भी हड़ताले रखी गई, विरोध सभाएँ की गई इसी वर्ष भारतीय राजनीति में महति भूमिका निभाने को गांधी जी का पदार्पण हुआ और वर्ष के अंत में उन्होनें छत्तीसगढ का दौरा किया।

इस प्रकार से छत्तीसगढ के जिलो में राष्ट्रीय आन्दोलन परिलक्षित हुआ तथा छत्तीसगढ के रायगढ सरगुजा आदि जिलो में भी हमारे ब्राह्मण सेनानियों के सहयोग से राष्ट्रीय जागकरण हुआ तथा आगे उन्नति का मार्ग द्रष्टव्य हुआ।

National Archievs of India, New Delhi Portrightly Report on Internal political situation m.c.p Barar, April 1919.

असहयोग आन्दोलन और ब्राम्हण वर्ग का सहयोग

गांधी जी के आवाहन पर 19 मार्च 1920 को राष्ट्रीय शोक दिवस मनाया गया जिसमें उपवास प्रार्थनायें एवम हडताले की गयी। इस अवसर पर गांधी जी ने घोषणा की कि यदि तुर्की के साथ संधि की शर्ते भारत के मुसलमानों की भावना के अनुकूल ना हो तो वे असहयोग आन्दोलन प्रारंभ करेंगे। गांधी जी ने अपने ये विचार 10 मार्च के घोषणा पत्र में पहले ही प्रकट कर दिया गया था। (1)

महात्मा गांधी ने कहा था कि यदि हमारी मांगे स्वीकार नही हुई तो हमें क्या करना चाहिए इस पर विचार कर लेना आवश्यक है एक जंगली मार्ग खुल्लमखुल्ला या छिपे हुये युद्ध का है इस मार्ग को छोड़िये क्योंकि यह एक अव्यवहार्य है। यदि मैं सबको यह समझा सकूं कि यह उपाय हमेशा बुरा है तो हमारे सब उद्देश्य सब उद्देश्य जल्दी सिद्ध हो जायेंगे। कोई व्यक्ति या कोई राष्ट्र हिंसा के त्याग द्वारा जो शान्ति उत्पन्न कर सकता है, उसका मुकाबला कोई नही कर सकता। परन्तु आज जो मैं हिंसा के विरूद्ध तर्क पेश कर रहा हूं वह इस कारण कि परिस्थितियां ही ऐसी है और ऐसी अवस्था में हिंसा सर्वथा व्यर्थ सिद्ध होगी अतः हमारे लिये असहयोग ही एक मात्र औषधि है। यदि यह सब तरह की हिंसा से मुक्त रखा जाय तो यह रामबाण औषधि साबित होगी।

---

1. श्री पट्टामी सी तारमैया : कांग्रेस का इतिहास.
2. श्री पटटामी सी तारमैया: कांग्रेस का इतिहास

उन्होंने आगे कहा था , यदि सहयोग के द्वारा हमारा पतन और हमारे तेज का नाश होता है तथा हमारे धार्मिक भावों को आघात पहुंचता हो तो असहयोग हमारे लिये कर्तव्य हो जाता है। इंग्लैण्ड हमसे यह आशा नही रख सकता कि हम उन अधिकारों का हनन चुपचाप सह लेगे जो मुसलमानों के जीवन मृत्यु का प्रश्न है इसलिये हमें जड और चोटी दोनों ओर से काम आरंभ करना चाहिए। जिन्हें सरकारी उपाधियां या सम्मान प्राप्त है उन्हें त्याग देना चाहिए। स्वयम नौकरी छोड देना ही जनता के भावों और असंतोष की कसौटी है । सैनिकों से सेना में काम कराने से इंकार करने को कहने का समय अभी नही आया है वह उपाय अंतिम है पहला नही। जब वाइसराय, भारत मंत्री, तथा प्रधानमंत्री हमें दाद ही ना दें तभी हमें इस उपाय का अवलंबन करना चाहिये। इसके अभाव में सहयोग तोडने में एक-एक कदम बहुत समझ बुझकर रखना होगा । हमें धीरे-धीरे बढना होगा जिसमें बडी से बडी उत्तेजना पर भी हम अपना आत्म संयम बनाये रख सकें। (1)

इस घोषणा का प्रभाव इतना व्यापक पडा इस संबंध में सरकार ने इंडिया 1920 में लिखा है--' इसमें कोई संदेह नही कि गांधी जी के आत्मबल के उपदेश को उनकी जनता ने उनके आत्म त्याग के सिद्धांत को माना है और उनके साधु जीवन की सराहना की। अपने अनेक देशवासियों के आहत राष्ट्र गौरव की वे मुक्ति का द्वार प्रतीत हुये। उनके आदेश अर्द्धदैवी आदेशों का प्रभाव रखते थे। (2)

---

1. बी पट्टाभी सीतारमैया : कांग्रेस का इतिहास पृ.
2. सरकार: इंडिया 1920 में उद्धृत

छत्तीसगढ में सन 1920 के प्रथम छः माह में पूरे प्रान्त की भाँति इसके जिलो में राजनीतिक सम्मेलन किये गये रायपुर बिलासपुर जिलों की ही भाँति रायगढ़ व सरगुजा जिलों में राजनीतिक सम्मेलन हुये जिनमें स्वराज्य तथा खिलाफत आन्दोलन की व्याख्या की जाती थी, असहयोग की नीति को इन जिला सम्मेलनों ने एक राजनीतिक शस्त्र के रूप में स्वीकार किया।.

जिला राजनीतिक सम्मेलनों के पश्चात इन जिलो में अन्य जगहों की ही भाँति खिलाफत समितियों की रचना की गयी, जिनके सदप्रयत्नों से विभिन्न स्थानों पर सभायें की गयी और खिलाफत आन्दोलन को महत्व प्रदान किया गया इस तरह असहयोग एवम खिलाफत आन्दोलन का संदेश एक जिले से दूसरे जिले तथा एक स्थान से दूसरे स्थान तक फैलता गया इस राष्ट्रीय धारा का प्रभाव निकटवर्ती देशी रियासतों में भी देखा गया। [1][2]

नागपुर कांग्रेस के अधिवेशन में सम्मिलित होने वाले प्रतिनिधियों ने अपने अपने शहर तथा गांव जाकर असहयोग एवं बहिस्कार का प्रचार प्रसार करना प्रारंभ कर दिया सही अर्थो में छत्तीसगढ में राष्ट्रीयता की स्पष्ट जागृति इस सम्मेलन के बाद ही अंकुरित हुई रियासत में खैरागढ़ तथा राजनांदगांव में ही सिर्फ असहयोग आन्दोलन से पूर्व ही राष्ट्रीय भावना का विकास हो चुका था।

---

1. श्री मुरलीधर मिश्र से लिया गया : साक्षात्कार 1977
2. डॉ0 जे.पी. शर्मा : मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आन्दोलन पृ. 57

असहयोग आन्दोलन के विभिन्न स्वरूप

बापू जी व उनके सैनिकों द्वारा असहयोग आन्दोलन के विभिन्न सात स्वरूप बनाये गये जिसे कार्यरूप दिया जाने लगा। ये सात स्वरूप थे। (1)

(1) भूमि का लगान न देना .
(2) सरकारी पदवियों का त्याग.
(3) स्कूल कालेज का बहिष्कार
(4) विदेशी वस्त्र बहिष्कार.
(5) ब्रिटेश न्यायालय का परित्याग.
(6) कौंसिल बहिष्कार.
(7) मद्यपान का बहिष्कार.

मद्यपान बहिष्कार :-

छत्तीसगढ़ की राजधानी नागपुर में मद्य निषेध कार्यक्रम को सर्वप्रथम सोत्साह मनाया गया, जिसके अन्तर्गत सारे शहर में मादेरा की दुकान पर धरना दिया गया, शासन द्वारा इसके संचालकों को बंदी बना लिया गया यह इतना प्रभावशाली था कि फरवरी 1921 में जब शासन ने शराब की दुकान को नीलाम करना आरंभ किया तब बोली बोलने वाले कठिनाई से उपलब्ध हुये, इससे मादक द्रव्य के व्यापार में भारी कमी आयी, और शासन को प्रत्यक्ष हानि हुई जिससे शासन इतना क्षुब्ध हुआ कि धरना देने वाले सत्याग्रहियों पर गोली चलाई गई। जिससे 10 व्यक्ति मारे गये। इस सबका विषम प्रभाव पडा और प्रान्त के अन्य अंचलो की भाँति छत्तीसगढ में भी आंतक और क्रोध की लहर फैल गई। (2)

---

1. बी पट्टाभि सीतारमैय्याः कांग्रेस का इतेहास पृ. 162
2. डी.पी.मिश्रः मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आन्दोलन का इतेहास पृ. 306

छत्तीसगढ़ के सभी जिलो की ही भाँति रायगढ़ व सरगुजा जिले में भी शहर के सभी चौक तथा सार्वजनिक जगहो में मादक द्रव्यों का बहिष्कार तथा पिकेटिंग करने का निर्णय लिया गया, जनता ने भी इस कार्य में अपने नेताओं को सहयोग दिया वस्तुतः शासन को इस सब घटनाओं ने प्रत्यक्ष चुनौती दी और इसे शासन ने बडी गंभीरता से लिया युवा सत्याग्रहियों द्वारा नित्य धरना व सभायें की गयी, जिसके परिणाम स्वरूप शराब की बिक्री लगभग बंद हो गयी , इस घटना से इस क्षेत्र की दबी हुई जनता को यह प्रेरणा मिली कि यदि संगठित होकर सशक्त आन्दोलन किया जाय तो ब्रिटिश शासन को भी झुकाया जा सकता है। इससे लोगों के मनोबल ऊंचे हुये और वे भविष्य में ठोस कार्यक्रम बनाने लगे। (1)

वकालत का त्याग असहयोग का आरंभ :-

अंग्रेजो की शासन की प्रतिष्ठा को धूल-धूसरित करने के लिये छत्तीसगढ में असहयोग आन्दोलन का प्रारंभ वकालत त्याग से हुआ। रायगढ सरगुजा आदि जिलो में इस आन्दोलन के लिये समाज के मध्यम वर्ग ने अभूतपूर्व भूमिका निभाई इस वर्ग ने राजनीतिक क्रिया कलापों को अपना नेतृत्व प्रदान किया इस कार्य में इन जिलो के ब्राह्मणों ने अपना विशेष सहयोग दिया वकीलों ने वकालत त्याग दी तथा राष्ट्रीय पंचायत का गठन किया गया। (2)

---

1. शोभाराम देवांगनः धमतरी तहसील का स्वतंत्र आन्दोलन पृ. 34-35
2. नगर पालिका निगमः रायपुर वार्षिक विवरण 1971-72 पृ. 33

विदेशी वस्त्र बहिष्कार :-

विदेशी वस्त्र बहिष्कार का कार्यक्रम दो तरफा था खादी का प्रचार तथा विदेशी वस्त्रों की होली। इस आन्दोलन को गति प्रदान करने हेतु धरना और सभाओं का माध्यम अपनाया गया विदेशी वस्त्र विक्रेताओं से आग्रह किया गया कि वे अपने विदेशी कपडो को या तो उत्पादक मिलो को वापस कर दें अन्यथा सील लगाकर बंद कर दें। इसके साथ ही साथ जनता से आग्रह किया कि वे अधिक से अधिक ग्रामीण मजदूरों द्वारा बुने हुये खादी का प्रयोग करे और यदि यह संभव न हो सके तो स्वदेशी मिल के कपडो का उपयोग करें। विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार के संबंध में ही सत्याग्रही द्वारा घर-घर जाकर विदेशी वस्त्र एकत्रित करते और चौराहे पर विदेशी कपडो की होली जलाई जाती। सार्वजनिक जगहों पर विदेशी वस्त्रो व वस्तुओं का बहिष्कार किया जाता तथा स्वदेशी वस्त्र तथा वस्तु बेची और खरीदी जाती इस तरह विदेशी वस्त्र के बहिष्कार के दो तरफा पहलू ने विदेशी सरकार को अत्यधिक आर्थिक क्षति पहुंचाई।

इन सबका परिणाम यह निकला कि शासकीय आज्ञाओं की अवहेलना खुला, प्रदर्शन धरना एवम बहिष्कार ने लोगों में भय का अन्त किया और शक्ति सम्पन्न सत्ता के सामने सीना तानकर खडा होना, अपने मस्तक को ऊंचा रखना किसी भी अन्याय का विरोध कर आदि कार्य निश्चय ही राष्ट्रीयता के उत्कर्ष का स्पष्ट प्रतीक था । इस राष्ट्रीयता की भावना को कुचलने का शासकीय कुचक्र चला- जेल भरे गये , किन्तु स्वयं सेवकों का उत्साह बढ़ता गया।

परिषद बहिष्कार :-

इस आन्दोलन का स्वरूप सामान्य था विधान परिषद के निर्वाचन में उम्मीदवारों ने अपने नाम वापस लिये और अन्य खडे उम्मीदवारों को मत न देने के लिये मत दाताओं से प्रचार किया गया यद्यपि ब्रिटेश शासन ने तीन बार जिला परिषद की चुनाव कराने की घोषणा की किन्तु तीनों बार ही जिला परिषद के चुनाव के लिये कोई उम्मीदवार खडा नही हुआ। (1)

सरकारी पद व उपाधियों का त्याग :-

असहयोग के कार्यक्रम में सरकारी पद एवम उपाधियों के त्याग का कार्यक्रम अखिल भारतीय स्तर पर रखा गया था संपूर्ण भारत में कई सरकारी कर्मचारियों ने अपने पद त्याग दिये और उपाधियों का परित्याग किया, सुभाष चन्द्र बोस के आई.सी.एस. पद त्यागने का इतना व्यापक प्रभाव सारे देश पर पडा कि सरकारी पद व उपाधियों के त्याग की असंख्य घटनायें घटी। इसी प्रकार राजकीय मेहमानों के लिये आयोजित समारोह तथा अन्य कार्यक्रमों का बहिष्कार भी असहयोग आन्दोलन के प्रारंभिक चरणों में ही यहां पर भी हुआ जिसमें जिले के समस्त सैनिकों का साथ यहां के ब्राहमणों ने कंधो से कंधा मिलाकर दिया इसी समय सभी जिलो में राजनीतिक परिषदें गठित हुई झंडा सत्याग्रह मनाने का निश्चय किया गया , सभी अंचलों की तरह छत्तीसगढ अंचल के सभी जिलो में भी झण्डा सत्याग्रह मनाया गया इसमें सरकारी भावनोआदि पर 7 दिनों तक राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया तथा झण्डा फहराने वालों की पुलिस अपने हिरासत में ले लेती। (2)

---

1. डॉ0 पट्टाभि सीतारमैयया : कांग्रेस का इतेहास पृ. 272
2. श्री देवी प्रसाद चौधरी से किया गया साक्षात्कार दिनांक 8.3.78 जबलपुर.

सविनय अवज्ञा आन्दोलन और ब्राह्मणों का प्रभाव

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने आन्दोलन को एक निश्चित दिशा देने के लिये लाहौर में अपना अधिवेशन किया 31 दिसम्बर की मध्य रात्रि को इस अधिवेशन में अनेक प्रस्ताव पारित किये गये जिनमें मुख्य प्रस्ताव इस प्रकार थे।(1)

(1) पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव (प्रतिज्ञा दिवस के रूप में)

(2) भावी निर्वाचन में भाग न लेने संबंधी प्रस्ताव.

(3) कांग्रेस जनों का कौंसिल की सदस्यता से स्तीफा संबंधी प्रस्ताव

(4) सविनय अवज्ञा आन्दोलन और कर बंदी आन्दोलन को पूरे देश में आरंभ करने के लिये कांग्रेस महा समिति को अधिकृत करने से सम्बंधित प्रस्ताव।

(5) देशी रियासतों के नरेशों से नागरिक स्वतंत्रता प्रदान करने से संबंधित प्रस्ताव.

गांधी जी ने अपनी पत्रिका यंग इंडिया के माध्यम से (30 जन 1930) ब्रिटिश सरकार को चेतावनी देते हुए अग्रलेखित शर्तें स्वीकार करने को कहा और इन शर्तों को न मानने पर भारतीय नागरिक सविनय अवज्ञा आन्दोलन को बाध्य होंगे ये शर्तें थी पूर्ण मद्यपान निषेध विनिमय दर घटाकर एक शिलिंग चारपेंस रखना जमीन का लगान आधा करना, शासन पर कौंसिल का नियंत्रण नमक कर की समाप्ति बडी नौकरियों के वेतन को आधा करना विदेशी आयात पर रोक, राजनैतिक बंदी की मुक्ति, खुफिया पुलिस हटाना तथा आत्म रक्षा के लिये हथियार रखने की स्वीकृति प्रदान करना आदि थे। (1)

---

1. डा. पट्टाभि सीतारमैयया : कांग्रेस का इतिहास : पृष्ठ 284

2.

लाहौर अधिवेशन के मूल प्रस्ताव के अनुरूप केन्द्रीय धारा सभा के 27 सदस्यों ने स्तीफे दिये , छत्तीसगढ में भी विधान परिषद से सदस्यों ने त्याग पत्र दिये लाहौर कांग्रेस के निर्णय को क्रियान्वित करते हुये छत्तीसगढ के सभी जिले की तरह इन जिलो में भी कर न दो तथा पट्टा मत लो आन्दोलन संचालित किया गया तथा नगर पालिका से प्राप्त आदेशों पर शासकीय भवनों तथा सार्वजनिक जगह के चौक पर झण्डा फहराया गया। (1)

गांधी जी द्वारा 6 अप्रेल 1930 को साबरमती आश्रम से दांडी समुद्र तट तक पैदल चलकर नमक कानून तोड़ा गया।

इसी तरह रायगढ़ तथा सरगुजा के गांधीवादियों द्वारा सार्वजनिक जगहों में नमक बनाकर नमक कानून को तोड़ा गया तथा उसे निलाम किया गया शहर के गणमान्य नागरिकों द्वारा उसे अधिक से अधिक धनराशि देकर खरीदा गया। नमक कानून भंग करने के पश्चात नेताओं द्वारा प्रतिबंधित साहित्य का पठन एवं उसके विक्रय का कार्य किया गया। (2)

उसके पश्चात विदेशी वस्त्रो की दुकानों पर पिकेटिंग का कार्यक्रम बनाया गया इस दिशा में सर्वप्रथम छत्तीसगढ़ की स्त्रियां, प्रायः प्रत्येक श्रमजीवी वर्ग एवं शिल्पियों ने एक घोषणा से विदेशी वस्त्र न पहनने की घोषणा की और प्रतिज्ञा की। लोगों ने विदेशी वस्त्र को त्याग ही नही अपितु उसकी पिकेटिंग की सार्वजनिक जगहों पर उसको जलाया गया मद्यनिरोध कार्यक्रम भी रखा गया, दुकानों पर पथराव भी किया गया। (3)

---

1. जे.पी.शर्मा: मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आन्दोलन पृ. 97
2. श्री बलभद्र प्रसाद शुक्ल (भाटापारा) से लिया गया साक्षात्कार.
3. श्री देवी प्रसाद चौधरी (जबलपुर) से लिया गया साक्षात्कार.

अब तक ब्रिटेश शासन ने समझ लिया था के राष्ट्रीय कांग्रेस के सहयोग के बिना भारत के किसी भी समस्या का हल नही हो सकता तब उन्होने 12 नवम्बर 1930 को लंदन में गोलमेज परिषद का आयोजन किया जहां पर लार्ड इरविन व गांधी जी में कुछ समझौते हुये जिसमें राजनैतिक बंदियों को रिहा किया जाना, जप्त सम्पत्तियों को वापस करना, शराब की पिकेटिंग की वैधता प्रदान की गयी, विदेशी वस्त्र के बाहिष्कार, नमक संग्रह, निर्माण एवम बिनाशुल्क के नमक विक्रय की स्वीकृति प्रदान की गयी इसके बदले में कांग्रेस ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन वापस ले लिया साथ ही द्वितीय गोल मेज परिषद में भाग लेना स्वीकार द्वितीय गोलमेज में देश की कोई भी समस्या का हल नहीं निकला ब्रिटेश सरकार की चुप्पी ने कार्य समिति को द्वितीय सविनय अवज्ञा आन्दोलन करने के लिये बाध्य किया गांधी जी के आवाहन पर द्वितीय सविनय अवज्ञा आन्दोलन में प्रतिज्ञा दिवस विदेशी वस्त्र एवं शराब की पिकेटिंग और विरोध सभाओं में जप्त साहित्य को पढने और बेचने का कार्यक्रम निशिचित किया गया।

4 जनवरी 1932 को गांधी जी व सरदार पटेल को गिरफ्तार कर लिया गया, तब छत्तीसगढ में बिलासपुर रायपुर, दुर्ग, रायगढ सरगुजा आदे जिलों की कांग्रेस समितियां युद्ध समितियों में परिवर्तित हो गयी और भावी सविनय अवज्ञा आन्दोलन को संचालित करने में जुट गयी। इसके कार्यक्रमों में 26 जनवरी को प्रतिज्ञा दिवस, विदेशी वस्त्रो व शराबों की दुकानों में पिकेटिंग का कार्यक्रम तय किया गया। छब्बीस जनवरी से ये कार्यक्रम जोर शोर से चलने लगे दुकानों पर पिकेटिंग होने लगी जिले के विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शन व प्रभात फेरियां निकाली गयी। [1]

---

1. जे.पी. शर्मा : मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आन्दोलन.

नेताओं द्वारा भाषण दिये जाते विदेशी वस्त्रो व शराब की दुकानों पर धरना देने के लिये इन वक्ताओं द्वारा भडकाया जाता शासन ने तो पूर्व ही निश्चय कर लिया था कि ज्यों ही ज्वाला भडकेगी त्यों ही नेताओं एवं कार्यकर्ताओं को बंदी बना लिया जायेगा वैसा ही हुआ और शासन जेल भरो कार्यक्रम बनाया गया परन्तु जनता के उत्साह में कोई कमी नहीआयी वे भी जान की बाजी लगाकर देश को आजाद कराने हेतु जुटे रहे उन्हें ही बनाया गया तथा जुर्माना भी हुआ जेल में उन्होनें अनेक यातना झेले। (1)

किसी भी आन्दोलन का आधार राजनीति ही नही हुआ करती बल्कि सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों और समस्याओं से इसका गहरा संबंध होता है द्वितीय सविनय अवज्ञा आन्दोलन का परिणाम चाहे जो भी रहा हो, किन्तु इससे गांधी जी का ध्यान समाज में हरिजनों की दयनीय स्थिति पर गया और उन्होनें हरिजन उदधार का कार्यक्रम बनाया यह कार्यक्रम छत्तीसगढ में सुन्दर लाल शर्मा के नेतृत्व में 12-13 वर्ष पूर्व ही प्रारंभ हो चुका था जो कि हमारे ब्राम्हण समाज के महति सेवक रहे और हमारे प्रेरणा स्त्रोत है जिन्होनें स्वातंत्रय के आन्दोलन में अपना योगदान दिया। (2)

---

1. शुक्ल अभिनंदन ग्रंथ: जीवनी खण्ड पृ. 28

2. नवभारत रायपुर (9 नवम्बर 1972) पृ. 2

भारत छोड़ो आन्दोलन और ब्राह्मण वर्ग

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के पश्चात गांधी जी ने और अन्य नेताओं ने देखा कि युद्ध समाप्त होने पर भी भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य से अधिक कुछ भी प्राप्त होने वाला नहीं है। इसके साथ ही शासन का स्वरूप आतंक पूर्ण हो चुका था इस गंभीर परिस्थिति पर विचार करने के लिये कांग्रेस कार्य समिति की बैठक 15-16 सितम्बर 1940 को बम्बई में बुलायी गयी और शान्तिपूर्ण अहिंसात्मक व्यक्तिगत सत्याग्रह करने का निश्चय किया गया।

व्यक्तिगत सत्याग्रह के सिद्धान्त :

इस सत्याग्रह में केवल वे ही व्यक्ति भाग ले सकते थे जिन्हें गांधी जी की स्वीकृति होती थी। गांधी जी ने विभिन्न समितियों से ऐसे व्यक्तियों की सूची मांगी जो अहिंसा का पूर्ण पालन करते हुये स्वेच्छा से कानून भंग सत्याग्रह करने को उत्सुक हो गांधी जी द्वारा स्वीकृत एक एक सत्याग्रह ग्रामों में युद्ध प्रचार करता हुआ तब तक पैदल आगे बढता जाय, जब तक वह गिरफ्तार ना हो जाय और पुनःछोड़ने पर वह पुनः उसी ढंग से सत्याग्रह करता जाय। [1]

व्यक्तिगत सत्याग्रह का संचालन शान्त पूर्ण रूप से करने के लिये प्रान्तीय कांग्रेस समिति को सत्याग्रह समिति में परिवर्तित कर दी गयी और यही समिति सत्याग्रहियों और गांधी जी के बीच संयोजक का कार्य करने लगी, छत्तीसगढ में इस सत्याग्रह को सार्वजनिक बनाने के लिये 4000 सभाये की गयी। [2]

---

1. प्रयाग दत्त शुक्ल : क्रान्ति के चरण : पृष्ठ 109
2. प्रयाग दत्त शुक्ल : क्रान्ति के चरण : पृ. 109

व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिये सर्वप्रथम सत्याग्रहियों को प्रशिक्षित किया गया, इसमें साम्प्रदायिक एकता, हरिजन उद्धार खादी का प्रचार, मादक द्रव्य निषेध, ग्रामोद्धार आदि कार्यक्रमों पर विशेष रूप से ध्यान देने का आदेश दिया गया। इस कार्यक्रम को सम्पन्न करते हुये लोग गिरफ्तार हुये सजायें हुयी तथा जुर्माना भी हुआ । [1]

अंग्रेजो भारत छोड़ो का प्रस्ताव तथा बम्बई में कांग्रेस महासमिति की बैठक

7 अगस्त 1942 को बम्बई में महासमिति की बैठक हुयी तथा 8 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो का प्रस्ताव पारित हुआ। इस आन्दोलन में निःशस्त्रीकरण को व्यवहारिक बनाने पर अधिक बल दिया गया था। इसके अतिरिक्त महात्मा गांधी के नेतृत्व में अहिंसात्मक संघर्ष चलाने की अपनी इच्छा प्रकट की और भारतीयों से इस आन्दोलन को चलाने की अपील की गयी साथ ही यह भी स्पष्ट कर दिया गया कि प्रत्येक व्यक्ति अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करें। किन्तु इस आन्दोलन का आधार अहिंसात्मक होना चाहिए।

भारत छोड़ो प्रस्ताव पर शासन की प्रतिक्रिया यह हुई कि शासन द्वारा कांग्रेस को अवैधानिक घोषित किया गया और 9 अगस्त को मध्य रात्रि को कांग्रेस के समस्त शीर्ष नेताओं को बंदी बना लिया गया। [2]

---

1. नगर पालिक निगम रायपुरः वार्षिक विवरण 1971-72 पृष्ठ 45
2. जे.पी. शर्मा मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आन्दोलन पृ. 170

इस तरह से भारतीय कांग्रेस संस्था अवैधानेक घोषेत की जा चुकी थी और भारतीय स्तर के वारेष्ठ नेताओं को 9 अगस्त की मध्य रात्रे को बम्बई में बंदी बना लिया गया था मध्य प्रान्त के प्रमुख नेताओं को विभिन्न शहरों में उनके निवास स्थान में बन्दी बना लिया गया उन प्रमुख नेताओं की अनुपास्थिते में भी छत्तीसगढ़ में भारत छोड़ो आन्दोलन का संचालन शेष नेताओं ने बड़ी ही गंभीरता से करके अपने उत्तर दायेत्व को निभाया यह आन्दोलन मुख्यतः चार चरणों में घाटेत हुआ।

सर्वप्रथम प्रदर्शन तथा सभा किया गया कातिपय नेताओं ने भूमेगत होकर आन्दोलन करने का बीड़ा उठाया नेताओं ने हस्तालेखित पर्चे साइक्लोस्टाइल तथा टाइप किये परचे निकालकर नित्य प्रति के आन्दोलन का मार्गदर्शन किया।

इस आन्दोलन के द्वितीय चरण के विद्यार्थियों द्वारा संचालित था, इन्होनें रेल की पटरी उखाड़ना लेटर बाक्स जलाना, टेलीफोन के तार काटना इस तरह के कार्य किये और बंदी बनाये गये। तृतीय चरण में चार पृष्ठ की पात्रेका अथवा परचा वितारेत कर आन्दोलन के मन्द गति को तेज करने का कार्य किया।

चौथे चरण में शासकीय दमन जब असहय हो उठा तब क्रान्तिकारी सेनानी गुप्त रूप से आन्दोलन को संचालित करने लगे। इस दिशा में क्रान्तिकारी संगठनों का फैलाव राष्ट्र व्यापी हो गया इस समय तक छत्तीसगढ में भी लाल सेना क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना हो चुकी थी।

---

1. जे.पी. शर्मा: मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आन्दोलन पृ. 174.

इस संगठन में प्रशिक्षित तथा अनुशासित स्वयंसेवक थे इसका लक्ष्य शस्त्रों के माध्यम से देश को स्वतंत्र कराना था। शस्त्रो की आपूर्ति पुलिस थानो के शस्त्रागारों से शस्त्रों का अपहरण करके की जाती थी। अंत में आजाद हिन्द फौज का संगठन पूर्व क्षेत्रो में उसके द्वारा मित्र राष्ट्र विरोधी युद्ध संचालन तथा अंदमान व कोहिमा तक आजाद हिन्द सरकार द्वारा कब्जा ये सब भारतीयों के लिये प्रेरणा दायक रही इन्हीं घटनाओं ने ब्रिटेश सरकार की स्थिति भारत और आसपास के देशों में नैतिक दृष्टि से भी बहुत कमजोर कर दी थी।

भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम --

इस परिपेक्ष्य में ब्रिटेश सरकार ने 18 जुलाई 1947 को भारतीय स्वाधीनता विधेयक ब्रिटेश संसद में पेश किया। संसद ने सर्वसम्मति तथा बहुत ही शीघ्रता से इसे पारित किया। इसी अधिनियम के अनुसार 14 अगस्त 1947 को रात्रि को 12 बजे भारत पाकेस्तान दो स्वतंत्र उपनिवेशों का निर्माण निश्चित किया गया। सत्ता के हस्तान्तरण के सदर्भ में इस अधिनियम में दो संविधान निर्मात्री सभा को ब्रिटेश भारतीय सत्ता सौंपने की व्यवस्था थे। ये संविधान सभायें अपने देश के लिये स्वयं संविधान बनाने के लिये स्वतंत्र थी। कांग्रेस के समस्त शीर्षस्थ नेताओं ने भी अनेको विषम परिस्थितियों में भी जब भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 में पारित हुआतब इसका स्वागत किया। [1]

---

1. जे.पी. शर्मा : मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आन्दोलन पृ. 195

भारतीय स्वतंत्रता और ब्राहमण वर्ग की स्थिति

भारत में 14 अगस्त की मध्य रात्रि में उल्लास तथा गंभीर वातावरण में संविधान निर्मात्री सभा का अधिवेश बुलाया गया था, और उसी सभा के समक्ष भारतीय स्वाधीनता से संबंधित दस्तावेज भारतीय प्रतिनिधि को सौंप दिया और संविधान निर्मात्री सभा के सदस्यों ने स्वतंत्र भारत के प्रति शाश्वत निष्ठा की शपथ ग्रहण की। (1)

स्पष्ट है कि कि वर्षों के अनवरत प्रयास केपरिणाम स्वरूप स्वाधीन भारत का जन्म हुआ। स्वतंत्र स्वाधीन भारत स्वर्ण विहान मनाने के निमित्त संविधान निर्मात्री सभा की बैठक पुनः 15 अगस्त को 1 बजे बुलाई गयी जिसका उदघाटन लार्ड माउण्टबेटन ने किया। भारतीय राजधानी दिल्ली शहर उल्लास प्लावित हो रहा था। सर्वत्र हर्षनाद और जयमान का वातावरण मनोरंजक हो गया था, आज लोग बीती विपदा व कष्टों को भूल चुके थे इसी स्थिति में भारत का विभाजन हुआ आजादी की कीमत भारत को विभाजन से चुकानी पड़ी।

सत्ता हस्तान्तरण के पूर्व ही छत्तीसगढ़ अंचल में हर्षोल्लास का वातावरण तैयार हो चुका था सभी को विदित था कि दिनांक 14.15 की मध्य रात्रि में वास्तविक रूप से सदियों से पराधीन जनता को उसकी स्वाधीनता की प्राप्ति होगी अपने भाग्य का वह स्वयं विधाता होगा। इस उत्सव को मनाने के लिये कई स्थानों पर समितियां नियुक्त की गयी संपूर्ण छत्तीसगढ में 14-15 अगस्त की मध्य रात्रि में एक ऐसा युग आया जिसके स्वागत में नगाड़े बज उठे।

---

1. डी.पी.मिश्र : मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास पृ. 484

बाजे बजने लगे, रेल की इंजेन सीटी बजाती रही मंदेरों के घंटे बजते रहे व विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी भवनों पर रोशनी की व्यवस्था की गयी।

छत्तीसगढ़ के समस्त जिलों की तरह रायगढ तथा सरगुजा में भी हर्षोल्लास का वातावरण था सभी स्वतंत्रता का जस्न मना रहे थे राजवाडे सजाये गये सरकारी भवनों पर रोशनी हुई थी सभी नाच गा रहे थे। सरकारी भवनों व चौकों पर ध्वजारोहरण किया गया प्रधानमंत्री के संदेश को पढकर सुनाया गया शहीदों के लिये उद्‌गार व्यक्त किये, सभाओं में आखेल भारतीय कांग्रेस सामेते का प्रस्ताव पढ़ा गया, वटवृक्ष तथा अन्य वृक्षों का रोपण किया गया किलो को रोशनी से सजाया गया विभिन्न जमींदारियों में भी स्वाधीनता दिवस मनाया गया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में छत्तीसगंढ के ब्राहमण समाज का विशेष योगदान रहा है रायपुर, बिलासपुर आदे जिलो के साथ साथ रायगढ, सरगुजा जिलों के ब्राहमण सेनानियों का विशेष योगदान रहा वे अपनी मातृभूमि की सेवा में अंत तक डटे रहे और कुछ लोग तो इस लडाई को लड़ते-लड़ते शहीद हो गये इन सेनानियों के नाम सुनहरें पन्नों पर लिखा जाना चाहेऐ परन्तु जानकारियों के आभाव में हमारे इन सेनानियों के न तो नाम ही प्राप्त हो रहे हैं और और न ही आज वे या उनसे संबंधित कोई व्यक्ति मौजुद है जो उन अमर सेनानियों के संबंध में हमें जानकारी दें वस्तुतः ब्राहमण सेनानियों ने अन्य सेनानियों की ही भांते महाते सेवा प्रदान किया।